उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग
मुख्य परीक्षा-2019
(सामान्य हिंदी)
मॉडल पेपर-2

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट:

(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के अंत में अंकित हैं।

(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग लिख सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

जीवन के समस्त आदर्श, नियम एवं सिद्धांत उसके अस्तित्व-रक्षण, पोषण एवं सुख-समृद्धि-वर्द्धन के लिये हैं, अत: मानव के वे समस्त व्यापार जिनसे उसके उक्त उद्देश्य में योग न मिले, गर्हित एवं त्याज्य हैं। अहिंसा, करुणा, परोपकार, सेवा, सहिष्णुता, क्षमा के भाव इसीलिये स्पृहणीय एवं वंदनीय हैं; और अकरुणा, निष्ठुरता, असहिष्णुता, निर्दयता तथा कठोरता गर्हित एवं त्याज्य है। किंतु, परिस्थितियाँ कभी-कभी ऐसी आ बनती हैं कि उसमें हिंसा अहिंसा का, अकरुणा करुणा का, असहिष्णुता सहिष्णुता का और कठोरता एवं निर्दयता क्षमा का पर्याय बन जाती है। ऐसे अवसरों पर अहिंसा करुणा, क्षमा एवं सहिष्णुता समाज, राष्ट्र और विश्व के लिये ही नहीं, वैयक्तिक जीवन एवं कल्याण की दृष्टि से भी पार्थिव ही नहीं, परमार्थिक मंगल-विधान की दृष्टि से भी-अभिशाप सिद्ध होती है। निसर्गत: ऐसी स्थितियों में कर्त्तव्य-निर्णय व्यक्ति के लिये कठिन हो जाता है। यदि वह प्रमाद नहीं करता, साधन और साध्य के भेद को दृष्टि-पथ में रखकर साध्य की महत्ता पर बल देकर उचित निर्णय लेता है तो उसके कार्य-व्यापार मांगलिक बीज-भाव की प्रेरणा से, स्थल बाह्यरूप में अमंगलकारी प्रतीत होते हुए भी, वस्तुत: स्पृहणीय, रमणीय एवं अभिनंदनीय होते है। आततायी राक्षसों, हिंसक जंतुओं के प्राणि-संहारकारी कृत्य सृष्टि विनाशकारी होने के कारण गर्हित एवं त्याज्य हैं। करुणा-सहचर परमात्मा की इस सृष्टि में उनके लिये स्थान नहीं है। उनका विनाश सृष्टि के हित-रक्षण एवं अस्तित्व-रक्षण के लिये आवश्यक है। अत: उनके प्रति अकरुणा, असहिष्णुता एवं कठोरता ही नहीं, उनकी हत्या भी विश्व मंगल विधायिनी होने के कारण स्पृहणीय एवं अभिनंदनीय है, धर्म के चरम सौन्दर्य की प्रतिष्ठात्री है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये। 5

(ख) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर मानव जीवन में आदर्श के महत्त्व को स्पष्ट कीजिये। 5

(ग) उपर्युक्त गद्यांश के रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिये। 20

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिये:

अनुशासन बाह्य नहीं, भीतरी नियंत्रण है। वह भीतर से बांधता है। यह भीतर से बांधना धर्म से संभव है। धर्म मनुष्य को नैतिकता की ओर ले जाता है। वह व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार के कुछ ऐसे मापदंड प्रस्तुत करता है, जो हमें उच्च संस्कार दे सकें। 'स्व' को 'पर' से पीछे रखने पर ही ये उच्च संस्कार सध सकते हैं। इसके लिये आत्मपोषी और अपरिग्रही होना आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा हमें आत्मबल नहीं देती, वह सूचना मात्र ही देती है। साहित्य और कला को हमने शिल्प तक सीमित कर दिया है। हमारा अध्ययन वैज्ञानिक हो गया है। वैज्ञानिकता का अर्थ है- विश्लेषणात्मक अध्ययन। ऐसे में न साहित्य हाथ में पड़ता है, न कला, न धर्म। हम परिधि पर ही चक्कर लगाते हैं। इसका फल यह है कि आज का शिक्षित मनुष्य भीतर से अशिक्षित है। उसने आज पशुत्व धर्म अपना रखा है। इससे न तो हम मनुष्य बन पा रहे हैं और न ही विकास कर पा रहे हैं। उसके भीतर एक बड़ा शून्य है, जो उसे बराबर कुरेदता रहता है और उसके अहं को उकसाता है। अहं को नष्ट करके ही हम मनुष्य बन सकते हैं। मनुष्य बनकर ही हम मनुष्यता अथवा मानवता का विकास कर सकते हैं।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिये। 5

(ख) मानव-समाज के लिये साहित्य के महत्त्व को स्पष्ट कीजिये। 5

(ग) प्रस्तुत गद्यांश का संक्षेपण कीजिये। 20

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

(क) उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से प्रदेश के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्नातक कक्षाओं में 30% अतिरिक्त स्थान बढ़ाने की सूचना देने हेतु, एक परिपत्र का प्रारूप प्रस्तुत कीजिये। 10

(ख) अर्द्धशासकीय पत्र से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इसके प्रारुप का एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिये। 10

4. निम्नलिखित उपसर्गों/प्रत्ययों से एक-एक शब्द की रचना कीजिये: 10

अध, जा, बहु, आलय, तत्, इन, वि, हर, त्री, स्व

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिये: 10

अनुरक्त, गौरव, ज्योतिर्मय, आवाहन, श्री गणेश, निद्रा, स्वल्पायु, उषा, ईप्सित, उद्गम

6. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिये: 5

(i) अत्यधिक व्यस्तता स्वास्थ्य के लिये हानिप्रद है।

(ii) यद्यपि मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ पर मैं आपका यह कार्य नहीं कर सकता।

(iii) मैं गुरु जी से श्रद्धा करता हूँ।

(iv) व्यक्ति को अपने समय का अच्छा सदुपयोग करना चाहिये।

(v) यहाँ प्रात:काल के समय का दृश्य बड़ा ही सुहावना होता है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिये: 5

अन्तर्ध्यान, वांगमय, द्वन्द, अनुदित, कालीदास

7. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिये एक-एक शब्द लिखिये: 10

(i) अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला।

(ii) रंगमंच के पर्दे के पीछे का स्थान।

(iii) जो धरती फोड़कर जन्मता हो।

(iv) जीवन के एक अंश को लेकर लिखा गया प्रबंधकाव्य।

(v) एक-दूसरे पर आश्रित होना।

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये: 30

(i) इहा कुम्हड़ बतिया कोऊ नाहि

(ii) उठा न रखना

(iii) कलेजा दो टूक होना

(iv) भगीरथ प्रयत्न

(v) मेंढक को भी जुकाम होना

(vi) आस्तीन का सांप होना

(vii) अपने पैरों पर खड़ा होना

(viii) चलती गाड़ी में रोड़े अटकाना

(ix) गूलर का पेट फूलना

(x) कंगाली में आटा गीला होना